विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह ता:-०८-०९-२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित) पाठ:- दशम: पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक ७. तस्य तीक्ष्णनखाभ्याम् तु चरणाभ्याम् महाबल।

चकार बहुधा गात्रे व्रणान्पतगसत्तमः।।
शब्दार्थाः- तस्य -उसके(जटायु के) , तीक्ष्णनखाभ्याम् -तेज नाखूनों से ,

चरणाभ्याम् -पैरों से , महाबल: - बहुत बलशाली , चकार - किया , बहुधा -बहुत से,गात्रे – शरीर पर ,

पतगसत्तमः -पक्षियों उत्तम(श्रेष्ठ) , व्रणान् -घावों को

अन्वयः - ततः पतगसत्तमः महाबलः खगः तीक्ष्णनखाभ्याम्

चरणाभ्याम् च तस्य गात्रे बहुधा व्रणान् चकार।

अर्थ-

उस उत्तम तथा भाग्य शाली पक्षी (जटायु) ने अपने तीखे नाखूनों तथा पैरों से उस (रावण) के शरीर पर बहुत से घाव कर दिए ।